भजन

तर्ज– चौदवीं का चांद हो

सूरत कमाल है या बेमिसाल है
मेहर बिना ब्यान करें क्या मजाल है

1– शोभित है पाग शीश कमल पर हजूर के
चमके जिर्मी फलक इस मुखड़े के नूर से
सुन सुन के मीठी रसना रूह होती निहाल है

2– नैनों से उनके इश्क के सागर उमड़ रहे
मुस्कान देख अधरों की मोमिन उलझ रहे
बांकी है जिनकी चितवन वो नूरेजमाल हैं

3– कानन तलक हैं केश क्या खुशबू लिए हुए
मस्तक तिलक सुहामणा शोभा किए हुए
नूरी छबि जो देखे कभी हो बेहाल ह